P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-10* (Part-1) January 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हिन्दी का विश्वव्यापी रूप– एक परिचय

रूबी जुत्शी
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर

सारांश

सन 1969 (उनहत्तर) जनवरी में दक्षिण पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, कोरिया) में सांस्कृतिक मूल्यों पर विचार करने के लिए 'प्राच्य संस्कृति–परिषद' ने एक विशेष गोष्ठी का आयोजन बैंकाक में किया। परिषद के उपाध्यक्ष थाईलैंड के तत्कालीन उपप्रधानमंत्री राजकुमार वैथ्यकोरन थे। इसमें भाषा के बारे में यह तर्क–वितर्क हुआ कि किसी भी भाषा का सम्मान उसके बोलनेवालों के सम्मान पर निर्भर करता है।

सन उन्नीसवीं सदी के मध्य से लेकर बीसवी सदी के आरम्भ तक मारीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना आदि भारत से सैकड़ों हजारों मील दूर (इंडोनेशिया, मलेशिया आदि) स्थित द्वीपों में जो हिन्दी भाषा दिन प्रतिदिन विकसित होती जा रही है उसका बहुत बड़ा कारण यह रहा है कि आर्यसमाज ने आरम्भ में अपने कुछ प्रचारकवहाँ भेजे जिसमें श्री लल्लनप्रसाद व्यास जी भी एक थे। जिन्होंने वहाँ हिन्दी के पठन–पाठनको बढ़ावा दिया उसके पश्चात् महात्मा गाँधी की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने वहाँ अपने केंद्र स्थापित किए और हिन्दी की विभिन्न परीक्षाओं को वहाँ लोकप्रिय बनाया। आज स्थिति यह है कि वहाँ हिन्दी माध्यम से शिक्षा दी जाती है यहाँ तक कि मारीशस में तुलसी के 'रामचरितमानस' को पढ़ाया जाता है और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' 'साप्ताहिक जनता' और 'जमाना' (पाक्षिक) पत्र भी हिन्दी में प्रकाशित होते हैं। बारहवीं कक्षा तक सप्ताह में तीन दिन एक एक घण्टे हिन्दी पढ़ाई जाती है। मारीशस शिक्षा सरकारी संस्था अन्य भाषाओं की भांति हिन्दी में आनर्स भी करवाते है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए मारीशस सरकार ने 'हिन्दी शिक्षक संगठन' बनाया है जो मारीशस के विभिन्न गाँव में जाकर बच्चों को हिन्दी की जानकारी देते है।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक मूल्य, भाषा का सम्मान, लल्लनप्रसाद व्यास, आर्यसमाज, रामचरितमानस, शिक्षा संगठन।

प्रस्तावना

जिस देश की अपनी भाषा नहीं होती है उस देश की उन्नति कैसे हो सकती है जब चीन, जापान, रूस जैसे बड़े देश अपनी–अपनी भाषा के बल पर उन्नति कर सकते हैं तो भारत क्यों नहीं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का उद्देश्य यही है कि भाषा को धर्म के साथ न जोड़ा जाए। भाषा को कोई धर्म नहीं है। भाषा उसी की होती है जो उसको अपनाए। अतः हिन्दी मन से पढ़ें, मन से अपनाए।

सूरीनाम में छः आकाशवाणी और चार दूरदर्शन केन्द्र है जहाँ संगीत, धार्मिक प्रचार चर्चा, साक्षात्कार, सूचनाएं, विज्ञापन और समाचार हिन्दी में दिए जाते हैं। हिन्दी, अवधी, मगही, भोजपुरी, मैथिली के मिश्रण से तैयार हुई इस भाषा को सरनामी हिन्दी कहा गया है। विश्वविद्यालयों में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के पाठ्यक्रम को भी लागू किया गया है

गुयाना में भी प्रतिवर्ष लगभग सौ विद्यार्थी हिन्दी की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मलित होते है।

रूस के विद्यालयों में लगभग तीन सौ रुसी छात्र–छात्राएँ हिन्दी का अध्ययन करने में संलग्न है। रूस के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान स्वर्गीय पी.ए. वारत्रिकोव ने तुलसी के 'रामचरितमानस' का रुसी–भाषा में सुन्दर अनुवाद किया है। चनीर्शेव, चेलिशेव तथा समकालीन हिन्दी रुसी विद्वान प्रो. ल्युदमिलाखलोवा, प्रो. सर्गेय सेरिब्रियानी हैं। इन्होंने हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन के साथ 'हिन्दी–रुसी' शब्दकोश भी तैयार करवाया है और हिन्दी भाषियों के साथ हिन्दी में ही बात करना पसन्द करते हैं।

चेकोसुलवाकिया भी यूरोप में हिन्दी का प्रधान क्षेत्र है। वहाँ के प्राहाविश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की सुचारू व्यवस्था है।

डॉ.ओडेन स्मेकलजैसे विद्वान हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन में व्यस्त है। अमेरिका के महाद्वीप में हिन्दी–उत्तरी अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका और मेक्सिको में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है।

एशिया महाद्वीप में हिन्दी

एशिया के जापान, बर्मा, दक्षिण कोरिया, उत्तरी कोरिया, श्रीलंका, नेपाल आदि देशों में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है। नेपाल में हिन्दी का पठन–पाठन प्राथमिक पाठशाला से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक है जिसमें 'जनकपुर बौद्धिक समाज' हिन्दी संस्था का प्रमुख योगदान रहा है यहाँ तक कि नेपाली तो देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है।

बर्मा में द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व हिन्दी एक लोकप्रिय भाषा थी बीच में इस की लोकप्रियता कम हुई थी किन्तु अब फिर से हो रही है। वहाँ 'बर्मा समाचार' जैसे हिन्दी पत्र भी प्रकाशित होता है। श्रीलंका विश्वविद्यालय में हिन्दी–विभाग कार्यरत है और वहाँ की 'हिन्दी प्रचार सभा' नामक संस्था हिन्दी प्रचार के कार्य में संग्लन है। इसके अतिरिक्त पोलैंड, युगोस्लाविका, हंगरी, हॉलैंड आदि में भी हिंदी का विधिवत् अध्ययन अध्यापन करने की प्रवृत्ति को निरंतर प्रोत्साहित किया जाता हैं। इंग्लैंड के पादरी पिकांट ने उन्नीसवीं सदी के अंत तक हिंदी में घ्यान प्राप्त कर लिया और आज भी इंग्लैंड में भी हिंदी का पठन पाठन हो रहा है।

ट्रिनीडांड में भी हिंदी की स्थिति अच्छी है। हिंदी फाउंडेशन ऑफ ट्रिनीडांड एंड टोबैगो { हिंदी निधि} आदि संस्थाएँ वहाँ हिंदी की कक्षाएँ संचालित करती है तथा हिंदी प्रशिक्षण भी देती है। 04 अप्रैल 1996 को हिंदी निधि ने वहाँ पाँचवा विश्व हिंदी सम्मलेन का आयोजन किया था। वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था भी है और पढाई भी जाती है। यहाँ हिंदी पीठ भी स्थापित की गई हैं। ब्रिटेन के लन्दन विश्वविद्यालय, कैंब्रिज विश्वविद्यालय तथा यार्क विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। यहाँ शोध कार्य भी किया जाता है।

कनाडा के हिंदी के विकास के लिए कई कार्यरत है साप्ताहिक पत्रों में हिंदी टाइम्स, हिंदी अब्रॉड, हिंदी पत्रिकाओं में विश्वभारती, नमस्ते कनाडा, हिंदी चेतना, वासुधा आदि प्रमुख हैं। कनाडा में भारतीय कौसलावास, पनोरमा, हिंदी प्रचारणी सभा, कैनेडियन कौंसिल ऑफ हिन्दुस्, हिंदी साहित्य सभा आदि द्वारा समय समय पर कवि सम्मेलनो, कवि गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

इटली में वेनिस, टूरिन, रोम, ओरिएण्टल, मिलान विश्वविद्यालय में हिंदी पढाई जा रही है। पोलैंड में क्राकूब और पोजना के विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है। डॉ. रुकोवस्का, आजेय–बुगोव्सकी, प्रो. दानुता स्ताशिक आदि ने प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, मन्नू भंडारी आदि रचनाकारों के रचनाओं का अनुवाद पोलिश भाषा में किया है। बुल्गेरिया में हिंदी– संस्कृत अधयन्न केंद्र खोले गए है। सोफिया विश्वविद्यालय में प्रो० एमिल, श्रीमति वान्या गोधेवा, डॉ. बाल्वा मैरीनोना डॉ० रुसैवा पूरी तरह से हिन्दी के प्रति संलग्न है।

डॉ0 रचना शर्मा के अनुसार ''हिन्दुस्तानी (हिन्दी) ही एक ऐसी जबान है जो आमतौर पर उपयोगी साबित होती है और मेरी समझ में संसार की किसी भी भाषा की अपेक्षा उसका व्यवहार बहुत बड़े पैमाने पर होता है।''[6]

निष्कर्ष

चीन के पेचिंग विश्वविद्यालय, नानचिड विश्वविद्यालय आदि में हिंदी पढाई जाती है। प्रो० ची श्येन ने भारत विधा विभाग की स्थापना की है। प्रो० साहब ने वाल्मीकि रामायण का, गोदान, श्रीलाल शुक्ल का राग–दरबारी, जयशंकर प्रसाद की रचनाओं का चीनी भाषा में अनुवाद किया है। उपयुक्त देशों के अतिरिक्त एक तो दक्षिण अमेरिका में हिंदी नहीं प्रवेश कर पाती है और अफगानिस्तान, डेनमार्क, ईरान, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम आदि देशों में हिंदी शिक्षा की व्यवस्था तो है, परन्तु वहाँ हिंदी लोकप्रिय नहीं बन पाई है। कारण शायद यही रहा होगा कि संसार में जिन देशों की अंग्रेजी राजभाषा है उन देशों में हिंदी का प्रचार– प्रसार भली–भांति नहीं हो पा रहा है या नहीं होता है। ऐसा विदेशों में हिंदी की स्थिति सही हो सकती है। ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दी फिल्में संसार के लगभग सभी देशों में दिखाई जाती है और लोकप्रिय हो रही है। फिल्में विश्व में हिन्दी प्रचार का बहुत बड़ा साधन बना है और योग–संस्कृति की लोकप्रियता के कारणभी हिन्दी का प्रचार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वास्तव में देखा जाए तो हिन्दी स्वम में अपने भीतर एक अंतर्राष्ट्रीय जगतको छिपाए हुए है। हिन्दी में आर्य, द्रविड़, अरबी, फारसी, जापानी, अंग्रेजी आदि शब्द इसकी मैत्री प्रवृत्ति को उजागर करते है।''सन 1999 में टोकियो विश्वविद्यालय केप्रो. होजीम तनाका ने जो भाषाई आंकड़े 'ट्रांसलेशन शिखर बैठक' में प्रस्तुत किए थे वह यह है कि उनके अनुसार विश्व में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम, हिन्दी का द्वितीय तथा अंग्रेजी का तृतीय है। देखा जाए तो सन 1050 से ही अंग्रेजों का योगदान रहा है जब गासी–द–तासी ने हिन्दी साहित्य लिखा गासी ने अपनी पुस्तक की रचना फ्रेंचय भाषा में की। यह ग्रन्थ ब्रिटेन और एयरलेण्ड की प्राच्य साहित्य अनुवादक समिति की ओर पेरित में मुद्रित की गई। इस ग्रन्थ में 738 कवि जिनमें हिन्दी के 72 तथा शेष उर्दू के हैं। अतः हिन्दी किसी विशेष वर्ण की नहीं है धरोहर हिन्दी धर्म– जाति से है सदैव ऊपर।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिन्दी साहित्य का इतिहास राजनाथ शर्मा*
2. *हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास डॉ. चतुर्वेदी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2*
3. *शोध संचार बुलेटिन (पत्रिका), लखनऊ*
4. *विश्व पटल पर हिन्दी– डॉ.अनिरुद्ध सेंगर,मध्यप्रदेश*
5. *हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य डॉ. ऊषा अग्रवाल, झाँसी*
6. *हिन्दी की वैश्विक भूमिका : डॉ0 रचना शर्मा : पृ0 1, प्रकाशक : विश्व पुस्तक प्रकाशन, 304–7, बी.जी.–7, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली–63, भारत*